भारत सरकार

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण विभाग

लोक सभा

तारांकित प्रश्न संख्या: *194

दिनांक 01 अगस्त, 2025 को पूछे जाने वाले प्रश्न का उत्तर

चयापचय विकार से जुड़ा 'फैटी लीवर' रोग (एमएएफएलडी) के संबंध में जागरूकता

†*194. श्री असादुद्दीन ओवैसीः

क्या **स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) क्या सरकार को 'नेचर' में हाल ही में प्रकाशित अनुसंधान की जानकारी है जिसमें यह पाया गया है कि हैदराबाद में सर्वेक्षण किए गए सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र के 84 प्रतिशत कर्मचारियों को चयापचय विकार से जुड़ा फैटी लीवर रोग (एमएएफएलडी) है और 71 प्रतिशत मोटे हैं और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;

(ख) क्या सरकार ने एमएएफएलडी और संबंधित जीवनशैली संबंधी विकारों पर केन्द्रित कोई राष्ट्रव्यापी स्वास्थ्य सर्वेक्षण या जांच कराई है/कराने की योजना है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;

(ग) सरकार द्वारा एमएएफएलडी के बारे में जागरूकता बढ़ाने, स्वस्थ जीवन शैली के हस्तक्षेपों को बढ़ावा देने और कारपोरेट व्यवस्था में पोषण संबंधी मानकों में सुधार करने के लिए क्या कदम उठाए गए हैं/उठाए जाने का विचार है;

(घ) क्या सरकार का जीवन शैली संबंधी विकारों को दूर करने के लिए शहरी कारपोरेट कार्यालयों के लिए कार्यस्थल पर स्वास्थ्य संबंधी कोई दिशानिर्देश अथवा सलाह जारी करने का विचार है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है; और

(ङ) क्या इस उभरते हुए जन स्वास्थ्य मुद्दे का समाधान करने के लिए किसी अंतर-मंत्रालयी सहयोग की योजना बनाई जा रही है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है?

उत्तर

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री

(श्री जगत प्रकाश नड्डा)

(क) से (ङ): विवरण सभा पटल पर रख दिया गया है।

दिनांक 01 अगस्त, 2025 को उत्तर के लिए लोक सभा तारांकित प्रश्न संख्या *194 के उत्तर में उल्लिखित विवरण

(क): नेचर साइंटिफिक रिपोर्ट्स जर्नल में 2025 में प्रकाशित एक अध्ययन, जिसका शीर्षक था "भारत में सूचना प्रौद्योगिकी कर्मचारियों में मेटाबोलिक डिसफंक्शन से जुड़े फैटी लिवर रोग की व्याप्पता," जो हैदराबाद के 345 आईटी कर्मचारियों पर आधारित है, के अनुसार 118 (34.20%)कर्मचारियों में मेटाबोलिक सिंड्रोम (मेट्स) पाया गया। कुल 290 (84.06%) कर्मचारियों में लिवर में वसा की मात्रा अधिक पाई गई, जो आईटी कर्मचारियों में मेटाबोलिक सिंड्रोम (मेट्स) के उच्च व्यापप्ता को दर्शाता है।

(ख): आईसीएमआर द्वारा दिल्ली स्थित यकृत एवं पित्त विज्ञान संस्थान के साथ मिलकर भारतीय चयापचय एवं यकृत रोग (आईएमईएलडी) के प्रथम चरण पर राजस्थान के जयपुर की तीन तहसीलों के विभिन्न गाँवों में किया गया अध्ययन फैटी लिवर रोग (एफएलडी), मेटाबोलिक सिंड्रोम (मेट्स), मधुमेह (डीएम) और उच्च रक्तचाप (एचटीएन) के क्षेत्रीय जोखिम कारकों को समझने पर केंद्रित एक पहल थी। अध्ययन के प्रमुख निष्कर्ष यह हैं कि 37.19% प्रतिभागियों में फैटी लिवर रोग (एफएलडी) पाया गया, जिसमें पुरुषों में यह अधिक पाया गया। साप्ताहिक रूप से फास्ट-फूड खाने वालों (76.3%) में यह जोखिम अधिक था।

(ग) से (ङ): स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय ने राष्ट्रीय गैर-संचारी रोग रोकथाम एवं नियंत्रण कार्यक्रम के अंतर्गत गैर-अल्कोहलिक फैटी लिवर रोग (एनएएफएलडी) के लिए परिचालन दिशानिर्देश जारी किए हैं, जिनमें एनएएफएलडी की रोकथाम और प्रबंधन के लिए स्वस्थ आहार, नियमित शारीरिक कार्यकलाप, वजन प्रबंधन और कम चीनी/संतृप्त वसा सेवन का प्रावधान है। इसके अलावा, राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों से अनुरोध किया गया है कि वे दिशानिर्देशों के अनुसार स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं द्वारा स्क्रीनिंग और जोखिम स्तर का निर्धारण करें और समुचित रेफरल के लिए मार्गदर्शन करें।

आयुष्मान आरोग्य मंदिर के माध्यम से व्यापक प्राथमिक स्वास्थ्य परिचर्या के अंतर्गत, सामुदायिक स्तर पर स्वास्थ्य संबंधी कार्यकलापों को बढ़ावा देकर और लक्षित संचार के माध्यम से, गैर-संचारी रोगों (एनसीडी) के निवारक पहलू को सुदृढ़ किया जाता है। गैर-संचारी रोगों (एनसीडी) के बारे में जन जागरूकता बढ़ाने और स्वस्थ जीवनशैली को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्वास्थ्य दिवसों का आयोजन और निरंतर सामुदायिक जागरूकता के लिए प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक और सोशल मीडिया का उपयोग जैसे अन्य पहल शामिल हैं।

भारत सरकार, राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों द्वारा गैर-संचारी रोगों (एनसीडी) के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए एनएचएम के तहत वित्तीय सहायता प्रदान करती है। एनपी-एनसीडी के अंतर्गत आईईसी सामग्री और जन अभियानों के माध्यम से फैटी लिवर पर स्वास्थ्य संवर्धन संदेश प्रसारित किए जा रहे हैं।

भारतीय खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण (एफ़एसएसएआई) ने लीवर संबंधी स्वास्थ्य के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए अपने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर एक जागरूकता अभियान चलाया है। इस अभियान के तहत, दर्शकों का ध्यान आकृष्ट करने और लीवर संबंधी स्वास्थ्य पर महत्वपूर्ण संदेशों को प्रासंगिक और प्रभावशाली तरीके से व्यक्त करने के लिए रचनात्मक वीडियो और रील की एक विस्तृत श्रृंखला प्रसारित की गई है।

फिट इंडिया अभियान का क्रियान्वयन युवा कार्यक्रम और खेल मंत्रालय द्वारा किया जाता है और आयुष मंत्रालय योग से संबंधित विभिन्न कार्यकलाप संचालित करता है। आयुष मंत्रालय ने योग ब्रेक (वाई ब्रेक) नामक एक 5 मिनट का योग प्रोटोकॉल विकसित किया है, जिसका उद्देश्य पेशेवरों को तनावमुक्त, तरोताज़ा और पुनः ध्यान केंद्रित करने में मदद करना है। इसमें कुछ 'हल्के' व्यायाम शामिल हैं जिन्हें काम से कुछ मिनट का ब्रेक लेकर किया जा सकता है। इस प्रोटोकॉल में कुछ सरल योगाभ्यास शामिल हैं जिनमें आसन, प्राणायाम और ध्यान शामिल हैं। इसे प्रख्यात विशेषज्ञों द्वारा ध्यानपूर्वक विकसित किया गया है और यह एक जांचा-परखा हुआ प्रोटोकॉल है।

आयुष मंत्रालय के अंतर्गत अनुसंधान परिषदों के सहयोग से, स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय के आयुष वर्टिकल ने आयुष चिकित्सा पद्धति में मेटाबोलिक डिसऑर्डर के लिए मानक उपचार दिशानिर्देश (एसटीजी) प्रकाशित किए हैं। ये दिशानिर्देश विशेष रूप से एनएएफएलडी की रोकथाम और प्रबंधन पर केंद्रित हैं और मेटाबोलिक एवं जीवनशैली संबंधी स्वास्थ्य चुनौतियों के प्रति राष्ट्रीय अनुक्रिया में पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों को एकीकृत करने के एक समन्वित प्रयास के प्रतीक के रूप में हैं।

*****